Teacher name:
Sabina Kousar
Assistant Professor

Department name: Home Science Department

Ali Hafeez College Arrah.

B.A Undergraduate (U.G)
part III
paper V

Topic : रेशे और उसके आवश्यक गुण ।

Scanned with CamScanner

Topic : रेशे और उसके आवश्यक गुण।

Introduction :

प्रारंभ में आदिमानव को शरीर ढकने के लिए पेड़ों की छाल तथा पत्तों का प्रयोग किया करते थे। आहार की खोज में वह पशुओं का शिकार करते थे। उन पशुओं के खाल को खाल का शरीर के ढकने का रूप में प्रयोग करने लगा उसके बाद पक्षियों के घोसले बनाने तथा बेलो एवं लता-ओं के आपस में गुथे जाने से मानव को तिनको और टहनियों से बटकर और गुथकर रस्सीयों, चटाईयों इत्यादि बनाने की प्रेरणा मिली है।

वस्त्रों के निर्माण के प्रेरणा मानव में प्राकृति से ही मिले चटाई, रस्सी, टोकरी, डलियाँ आदि पेड़-पौधों से ही आदि प्राप्त कोमल रेशों को बाँटकर डोरा एवं धागा बनाते के समय उस वस्त्र रूप में भी बुनने की कला का प्रेरणा मिली है। पशुओं की त्वचा, पत्ते तथा छाल आदि शरीर को ढँकने के लिए प्रयोग किये जाते थे। लेकिन ये कड़े, रुखड़े एवं खुरदरे होते थे। ये सब शरीर रूपी क्रियाओं जैसे :- मुड़ने, झुकने तथा चलने आदि में बाधा पहुँचाते थे इस तरह कोमल रेशों से बुन कर तैयार किये गये वस्त्र के लिए सुविधाजनक सिद्ध हुई है।

वैसे तो प्राकृति में अनेक प्रकार के रेशे मिलते हैं। परंतु वस्त्र बनाने के लिए जिन रेशों का प्रयोग होता है। उनमे कुछ विशेष गुणों का होना आवश्यक है। रेशों वस्त्र निर्माण के लिए

Scanned with CamScanner

प्रयोग किये जा सकते है या नही यह बात उनके रसायनिक एवं भौतिक गुणो पर निर्भर करता है। इस प्रकार रेशो के अपने गुणो के महत्व का सहज अनुमान लगाया जा सकता है जो इस प्रकार है।

1. Strength (दृढ़ता) :→ वस्त्रो के निर्माण में रेशे ही काम में आते है। ये रेशे मजबूत हो, मजबूत रेशो से बने वस्त्र ~~टिकाऊं~~ टिकाऊ होते है और वस्त्र आसानी से तैयार किये जा सकते है। क्योंकि रेशो को बॉटते समय काफी खींचाव का सामना करना पड़ता है। ~~क्योंकि रेशो को बॉटते स~~ इसलिए जिन रेशो में खिंचाव सहने की शक्ति होती है वे वस्त्रो के निर्माण के लिए उपयोगी सीद्ध होती है।

2. पटयेश्या :→ रेशों को आपस मे सटाकर लम्बे धागे बनाये जाते है। इस प्रक्रिया में इन्हे रेमिट्यल से खीचकर लम्बा करके तथा बटाई करके तैयार किये जाते है। कटाई तथा बटाई के समय इनपर अत्यधिक खिंचाव कर तनाव को सहना पड़ता है। इसलिए रेशो मे प्रसारिक (फैलने या सिकुड़ने) होने के गुण होना चाहिए।

3. लचीलापन :→ प्रत्यास्थता के समान ही रेशे मे लचीलापन होने का भी गुण होना चाहिए। इन गुण के होने से रेशो को कताई - बटाई तथा बुनाई के समय खिंचाव एवं तनाव तथा झटको को सहने की क्षमता हो। लचीलापन रहने से रेशो मे मुड़ने, बिम पर चढ़ने, लपेटने आदि कि क्रियाओ को बिना टूटे हुए करने की क्षमता आती है। अगर जीन रेशो में इन गुणो का अभाव रहता है उनके बार - २ टूटने का डर रहता है। लचीलापन लिये हुए रेशो का धागा

Scanned with CamScanner

तथा वस्त्र बनाना आसान हो जाता है।

4 अवशोषकता → प्रत्यास्था तथा लचीलापन के समान ही अवशोषकता का रेशों में रह- ना चाहिए। इससे उन्हें कातना - बुनना तथा वस्त्रों के रूप में बुनना आसान होता है। धागों के फ्रेम पर चढ़ाते समय कई बार ऊँचा - नीचा करना पड़ता है। ऐसे रेशों के गुण होने से धागों को तन ने और झुकाने, मोड़ने एवं घुमाने एवं ऊँचा उठाने एवं नीचा झुकाने पर बिना टूटे स्थिर रहते हैं। ऐसे रेशों से बने वस्त्र अच्छे होते हैं।

5 अवशोषकता :→ नमी और आर्द्रता को अवशो- षित करने का गुण रेशों में होने चाहिए इसके कई कारण हैं वस्त्र हमेशा गंदे होते रहते हैं इस कारण इन्हें प्रतिदिन धोना पड़ता है। रेशों में नमी को सोखने के गुण से वस्त्रों की सफाई सहज से हो जाती है और ऐसे वस्त्र स्वास्थ्य के दृष्टि से अच्छे माने जाते हैं। नमी ग्रहण करने के तथा नमी मुक्त होने का गुण होना आवश्यक माना जाता है और दूसरी बात यह है कि हमारे शरीर पर जाने अंजाने हमेशा पसीना निकलते रहता है। नमी के गुण वाले वस्त्र शीघ्रता से पसीना सोख लेते हैं और त्वचा को स्वच्छ और शीतलता प्रदा- न करते हैं। इन गुणों से युक्त बने रेशों के वस्- त्र आरामदायक होते हैं।

6 गरम या विद्युतीय सम्वाहिता :→ जिन रेशों में ताप को सहने की क्षमता हो उन रेशों से बने वस्त्र अच्छे माने जाते हैं। आज के आधुनिक युग में अनेक तरह के रेशों के अविष्कार हुआ इन रेशों से बने वस्त्र भी

क्षमता कम रहती है लेकिन कुछ रेशे ऐसी होती है जिससे ताप को सहने की क्षमता होती है। उच्च सम्वहता वाले वस्त्रों का उपयोग आज के समय में अधिक होने लगा है।

7 आपस में सटने की क्षमता :→ रेशों में आपस सटने के गुण हो तो ऐसे वस्त्र अधिक उपयोगी होते है। रेशे अपने प्रकृतिक अवस्था में अत्यन्त छोटे एवं सुक्ष्म होते है इन्हें एक दूसरे के ऊपर तथा पास में रखकर बटाई की क्रिया द्वारा अविरल लम्बा धागा तैयार किया जाता है। बटाई कि क्रिया तभी संभव हो सकती है जब रेशों में एक दूसरे से सटने के गुण हो। सुक्ष्म रेशा जितना आपस में जल्दी से सटेंगे उतना ही अधिक धागा बनेगा और उत्पादन बढ़ेगा। आपस में सटने का यह गुण कपास के रेशे में होता है। पोलिन के रेशों की सतह खुरदरी और गाठें के कारण उतना लम्बा बनाना संभव नहीं हो सकता है।

8 कोमलता :→ कोमल रेशों से बने वस्त्र मुलायम होते है जिस कारण लोगों द्वारा अधिक पसन्द किये जाते है। परिधान के लिए वस्त्र कोमलता ही होने चाहिए। पहनने तथा लेटे पोछने के लिए वस्त्र मुलायम लिये हुए गुण के होना चाहिए। कोमलता के अतिरिक्त रेशों में बारीकी भी जरूरी है। क्योंकि मोटे रेशों से बने वस्त्र मोटे होते है। एवं खुरदरे होते है। बारीक रेशे से बने वस्त्र बारीक एवं मुलायम होते है। ऐसे वस्त्र देखने में सुन्दर तथा स्पर्श में सुखद लगते हैं।

9 सिकुड़े - मरोड़े से बचाव :→ रेशों में सिकुड़े न लगे ऐसे रेशा से बने वस्त्र अच्छे माने जाते है।

Page: ______

जिन रेशो मे किडे लग जाते है वे टिकाऊ नही होते है और जल्दी खराब हो जाते है। इसलिए रेशो मे किडो से बचने की क्षमता होनी चाहिए।

10 धोने एवं शोधक पदार्थो के अनुरूप ने वस्त्र दैनिक जीवन मे प्रयोग होते है इसलिए इन्हे स्वच्छ होना जरूरी है। वस्त्रो पर दाग - धब्बे पड जाते है जिन्हे छुडाने के लिए रसायनिको का प्रयोग किया जाता है। ऐसे शोधक पदार्थ कई प्रकार के होते है। कुछ क्षारियो भी होते है। कुछ अम्लियो भी होते है कुछ कोमल प्रकृति के होते है। इसलिए रेशो के अनुकूल शोधक पदार्थो का प्रतिक्रिया होना आवश्यक है। स्वच्छता के लिए शोधक पदार्थ भी आवश्यक है। जिससे वस्त्र आसानी से साफ किया जा सके तथा उस वस्त्र की विशेषता निखर कर सामने आये।

Thank you.

2020/4/28
Tuesday.

Safina Kausar